By:- Sunita Kumari
Dept. of History
J.N.C. Madhubani

वर्ण व्यवस्था (varna system)

वर्ण शब्द संस्कृत की 'वृ' धातु से निकला है जिसका शाब्दिक अर्थ वरण करना या चुनना होता है। ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में चारों वर्णों की उत्पत्ति विराट पुरुषों के चार अंगों से मानी गई है:-

ब्राह्मणोऽस्य मुख मासीद बाहू राजन्यः कृतः
उरूतदस्य यदवैश्यः पदभ्यां शूद्रोऽजायत ॥

अर्थात् विराट पुरुष (ईश्वर) के मुख से ब्राह्मण, बाहु से क्षत्रिय, जँघा से वैश्य एवं पैरों से शूद्र वर्ण की उत्पत्ति हुई है।

महाभारत के शांति- पर्व के 188वें अध्याय के दसवें श्लोक में वर्णों की उत्पत्ति ब्रह्मा से इस प्रकार बतायी है:-

ब्रह्मणां तु सितो क्षत्रियाणां तु लोहित: ।
वैश्याणां पीत को वर्ण शूद्रणाम सितस्पतया ॥

अर्थात् ब्रह्मा ने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र वर्ण की उत्पत्ति की जिनके रंग क्रमशः श्वेत लोहित पीला तथा काला था।

प्रारम्भ में वर्ण व्यवस्था का आधार कर्म था। ब्राह्मणों ने इसे पक्का आधार देने के लिए इसे दैविक विधान बताया ताकि इस व्यवस्था को दैविक मानकर लोग अपना नियत कर्म करते रहे। ब्राह्मण का कार्य कर्मकाण्ड सम्पन्न कराना था। राजा क्षत्रिय होता था जिसका कार्य रक्षा करना था। वैश्य का कार्य व्यापार था। इन तीनों वर्णों को सम्मिलित रूप से द्विज कहा जाता था। शूद्र वर्ण का कार्य इन तीनों वर्णों द्विज की सेवा करना था। कालान्तर में यह व्यवस्था कर्म के स्थान पर जन्म पर आधारित हो गयी।

महाभारत के आदिपर्व के 130वें अध्याय के 31 से 60 तक के श्लोकों में एकलव्य की कथा इस प्रकार वर्णित है:-

द्रोणाचार्य के पास एक बार निषादराज हिरण्यधनु का पुत्र एकलव्य धनुर्विद्या सीखने आया। निम्न वर्ण के कारण उन्होंने शिष्य नहीं बनाया। दृढ़ इच्छा के धनी एकलव्य ने वन में गुरु द्रोण की एक मिट्टी की प्रतिमा बनाई और अभ्यासरत हो गया। एकबार एक कुत्ता एकलव्य का काला रंग देखकर उस पर भौंकने लगा। एकलव्य ने सात बाणों से उसका मुख भरकर भौंकना बंद करवा दिया। पाण्डवों ने देखा कि कुत्ते के मुँह में खरोंच नहीं आयी और उसका मुख बंद है। उन्होंने महान धनुर्धर की खोज की। एकलव्य ने द्रोण के शिष्य के रूप में अपना परिचय दिया। अर्जुन ने द्रोण से कहा आपने तो आशीर्वाद दिया था कि पृथ्वी पर तुम सबसे धनुर्धर रहोगे। आपका शिष्य एकलव्य तो मुझसे श्रेष्ठ है। तब गुरु द्रोण ने गुरु दक्षिणा में एकलव्य का अँगूठा माँग लिया। एकलव्य ने अपना सहर्ष अंगूठा काटकर दे दिया। अब अर्जुन ही श्रेष्ठ धनुर्धर रहा।

इसी प्रकार रंगभूमि में सूत-पुत्र कर्ण अर्जुन से द्वन्द्व युद्ध के लिए आता है तब कृपाचार्य उससे कहते हैं कर्ण पहले अपने कुल का परिचय देना होगा। क्योंकि राजकुमार नीच कुल के लोगों से युद्ध नहीं करते। जब पता चलता है कि वह सूत पुत्र है तब भीम कर्ण से कहता है - अरे ओ सूत पुत्र तू तो अर्जुन के हाथ मरने योग्य भी नहीं है। तुझे तो शीघ्र ही चाबुक हाथ में ले लेना चाहिए क्योंकि यही तेरे कुल के अनुरूप है।

End